पाठ्यक्रम का मासिक विभाजन
सत्र 2024–25
कक्षा– 12
संगीत (वादन)

क्र0 स0	माह	पाठ्यक्रम
1	अप्रैल	पाठ्यक्रम में निर्धारित वाद्यों में से चुने गए वाद्य की संपूर्ण जानकारी, वाद्य के विभिन्न अंगों का वर्णन एवं मिलाने की विधि का विशेष ज्ञान।
2	मई	सामान्य संगीत सम्बन्धी विषयों पर निबन्ध। भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास (मध्यकाल एवं आधुनिक काल)
3	जून	**ग्रीष्मावकाश**
4	जुलाई	**भारतीय संगीतज्ञों की जीवनी एवं उनका योगदान–** पं0 विष्णु दिगम्बर पलुष्कर, गोपाल नायक ,"भारतरत्न" पं0 रविशंकर, पं0 किशन महाराज, पं0सामता प्रसाद, उस्ताद अहमद जान थिरकुवा। पन्ना लाल घोष, पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे।
5	अगस्त	**संगीत विज्ञान–** ख़रज, जमजमा, पेशकारा, टुकड़ा, गत, मुखड़ा, तान व तान के प्रकार (सपाट, कूट तान, अलंकारिक तान) गमक, सूत, घसीट का विस्तृत अध्ययन। कायदा, पलटा,परन, तिहाई,तिहाई के प्रकार। चिकारी, तोड़ा, परन, तिहाई।
6	सितम्बर	लय और उसके प्रकार, लयकारी और उसके विभिन्न प्रकारों की परिभाषा तथा अंकों में लिखने की योग्यता। संगीत का इतिहास एवं शैलियों का अध्ययनः तालें (सोलो प्रदर्शन) – तीनताल, धमार ताल। **संगीत का इतिहास एवं शैलियों का अध्ययनः** पाठ्यक्रम हेतु प्रस्तावित रागें एवं उनकी विशेषताएं– **राग–** राग जौनपुरी का विस्तृत अध्ययन। राग कामोद में रज़ाख़ानी गत बिना किसी विस्तार के। **ताल–**तीनताल और झपताल का परिचय, ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन की लयकारी में लिखना/हाथ में बोलने का ताली,खाली सहित अभ्यास। विभिन्न लयकारियों को तालिपि में लिखने की क्षमता
7	अक्टूबर	**राग–**राग वृन्दावनी सारंग का पूर्ण परिचय, विशेषताएं मसीतख़ानी गत, रज़ाख़ानीगत जिसका विस्तार सहित अभ्यास होगा। अर्द्धविस्तृत राग– राग बहार पूर्ण परिचय एवं उसकी रज़ाख़ानी गत तोड़ों सहित लिखित एवं प्रयोगात्मक अभ्यास। **ताल**– एकताल, चारताल का पूर्ण ज्ञान। पाठ्यक्रम की तालों –आड़ाचारताल, तीनताल, धमार माल के विभिन्न लयों के साथ गजझंपा, पंचमसवारी, जतताल में विभिन्न लयात्मक प्रकार तथा विभिन्न लयकारियों को ताल लिपि में लिखने की क्षमता जैसे– कायदा,परन, तिहाई, पेशकारा लिपिबद्ध करने की क्षमता। बनारस एवं फरूखाबाद घराना। **अर्द्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन।**
8	नवम्बर	पाठ्यक्रम में निर्धारित रागों में गतों को स्वर लिपिबद्ध करने की क्षमता एवं साधारण तोड़े एवं झाले के साथ लिखने की योग्यता। (2) विलम्बित, मध्य, द्रुतलय का ज्ञान। अर्द्ध विस्तृत रागों को अभिव्यक्ति आलापों द्वारा प्रस्तुत करने पर पहचानने की योग्यता का विकास।

		<u>सोलो प्रदर्शन की तालें–</u>जिनमें पर्याप्त बोल (ठेका, पेशकारा, परन, टुकड़े, तिहाइयाँ आदि) जानना चाहिए, दीपचन्दी ताल, गजझम्पा ताल, आड़ा चौताल।
9	दिसम्बर	**विस्तृत लिखित एवं प्रयोगात्मक अध्ययन–** राग केदार का पूर्ण परिचय एवं विशेषताओं सहित पूर्ण प्रायोगिक अभ्यास। **अर्द्धविस्तृत राग का अध्ययन–** राग हमीर। ताल– धमार ताल का परिचय तथा हाथ में ताली, खाली सहित अभ्यास। विभिन्न लयकारी जैसे कि दो मात्राओं को तीन में, तीन मात्राओं को चार मात्राओं में। वाद्य पाठ्यक्रम की निर्धारित रागों में स्वर विस्तार के माध्यम से रागों का विस्तार एवं भेद (रागों का तुलनात्मक अध्ययन) पुनरावृत्ति।
10	जनवरी	**पुनरावृत्ति प्री बोर्ड परीक्षा का आयोजन।**
11	फरवरी	बोर्ड परीक्षा का आयोजन।
12	मार्च	————————————————————————